

दिव्यदृष्टि

Anmol Mangulkar Presents :



नियमावली :-

यह खेल 4 teams में खेला जाएगा ।

यहाँ आपको एक साथ कुल 10 चित्र दिखाए जाएंगे, जिन्हें निर्धारित टीम को 1 मिनट के समय में क्रमशः याद करना होगा ।

तत्पश्चात् संचालकों द्वारा पूछे जाने पर क्रमशः ही सुनाना होगा ।

साथ ही उन चित्रों से कौनसे जैन सिद्धांत दर्शाया जा रहा है वह भी बताना होगा ।

Team 1

मास सेवन

बिना छना जल पीना

रात्री भोजन

मंदिर नहीं जाना

1

2

3

4

5

6

7

8

9

10



चोरी करना



मदिरापान करना



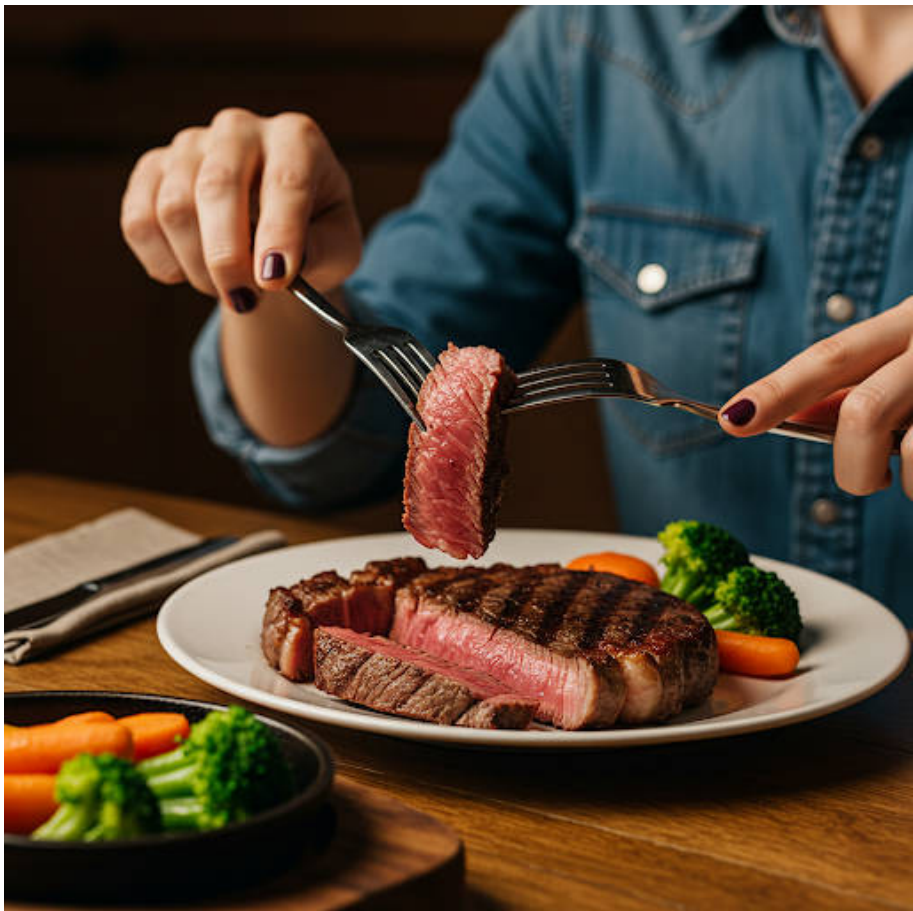
पर-स्त्री सेवन करना



शिकार करना









सप्त व्यसन + जैनी के 3 लक्षणों का पालन नहीं करना

Team 2

गर्भ कल्याणक

जन्म कल्याणक

तप कल्याणक

ज्ञान कल्याणक

मोक्ष कल्याणक

मनुष्य गति

तिर्यच गति

देव गति

नरक गति

पंचम गति

1

2

3

4

5

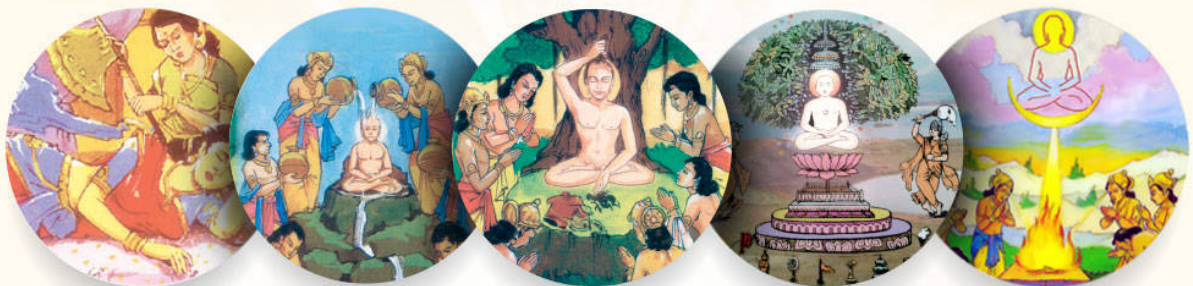
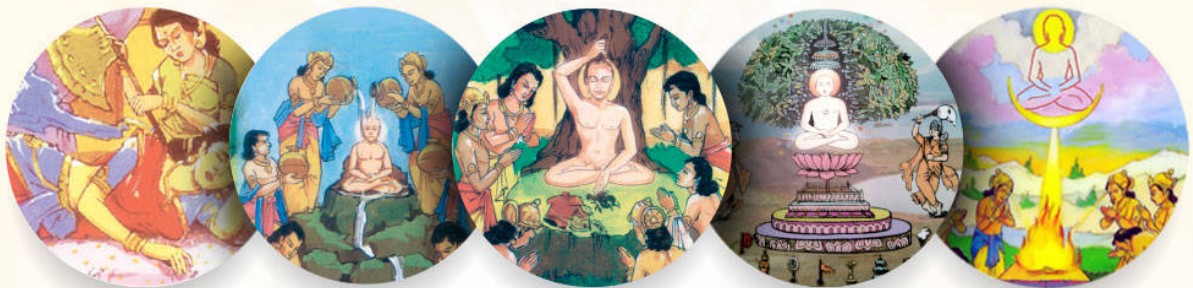
6

7

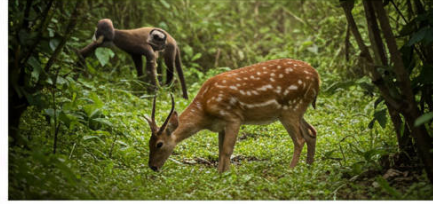
8

9

10









पंच कल्याणक +4 गतियाँ +पंचम गति

Team 3

आचार्य कुंदकुंद

समयसार

नियमसार

प्रवचनसार

अष्टपाहुड

पंचास्तिकाय

रयणसार

बारसाणुवेक्खा

सिद्ध भक्ति

मूलाचार

1

2

3

4

5

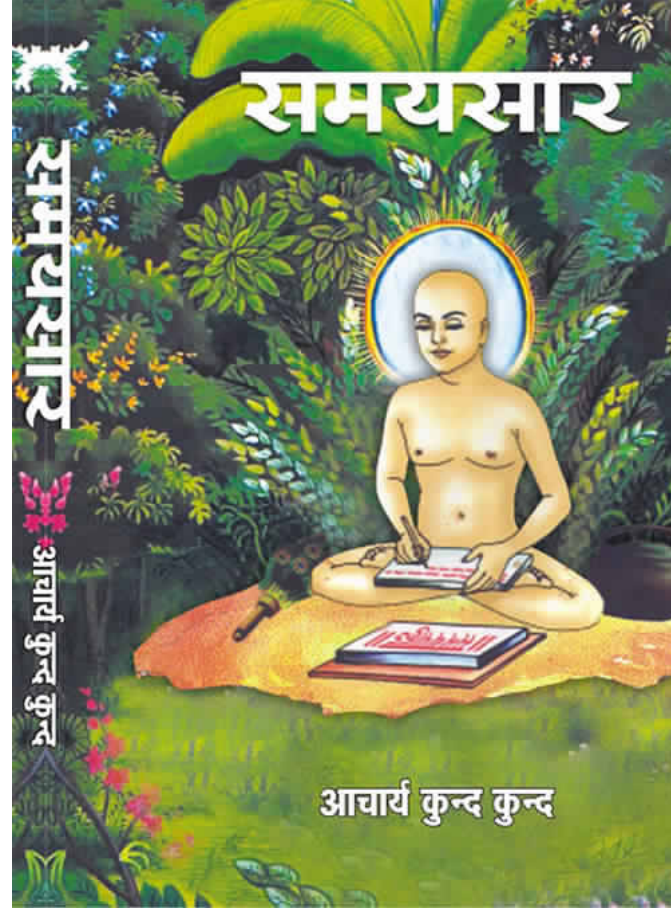
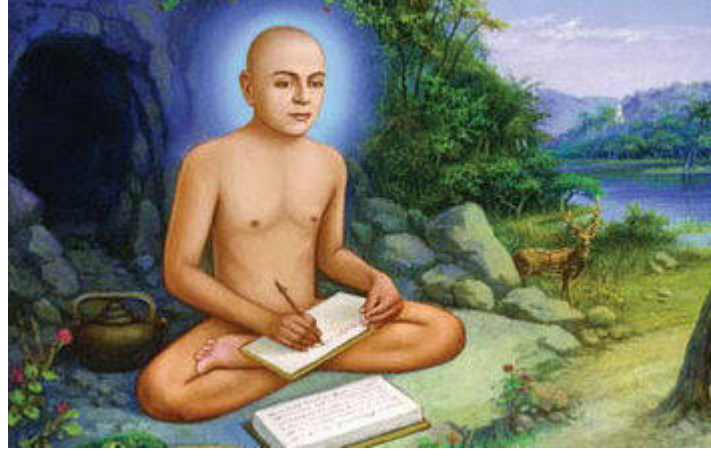
6

7

8

9

10

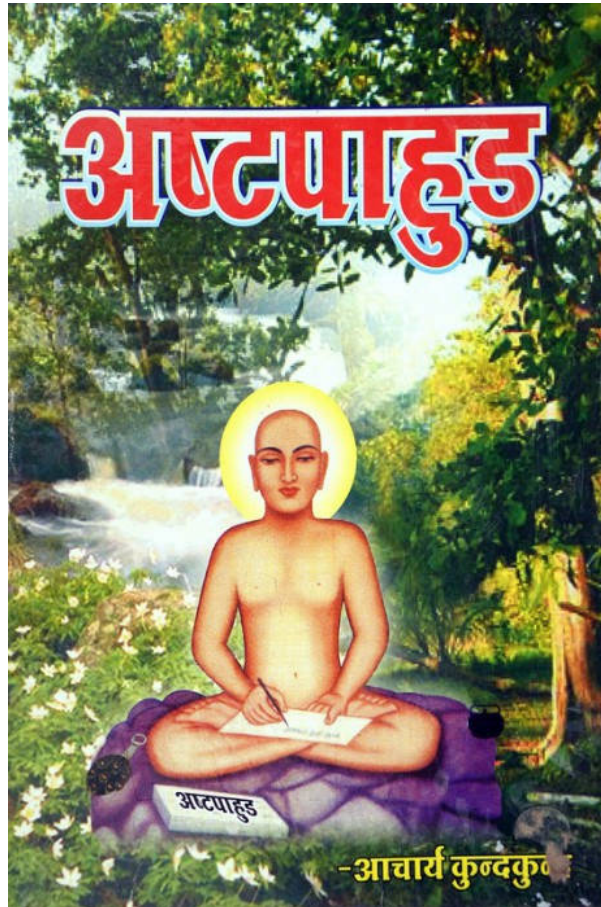


प्रवचनसार

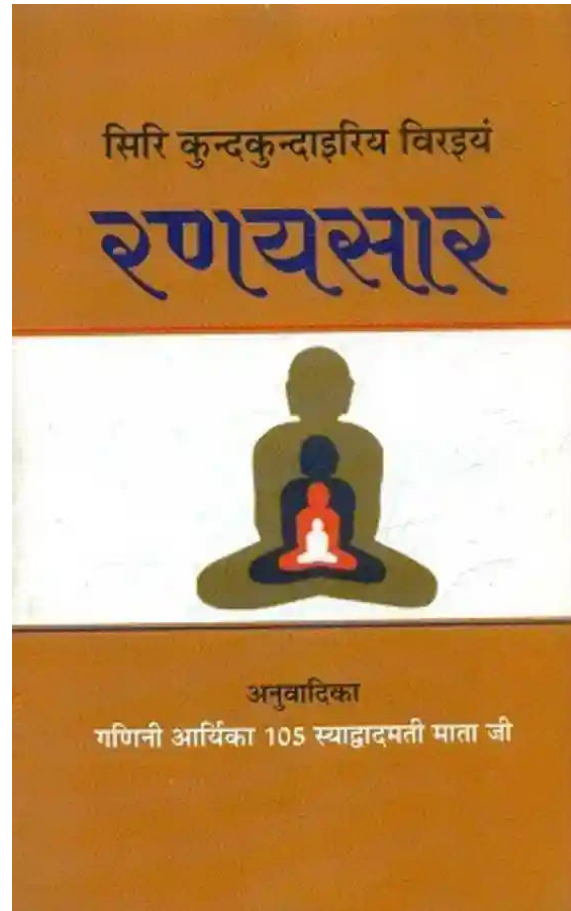
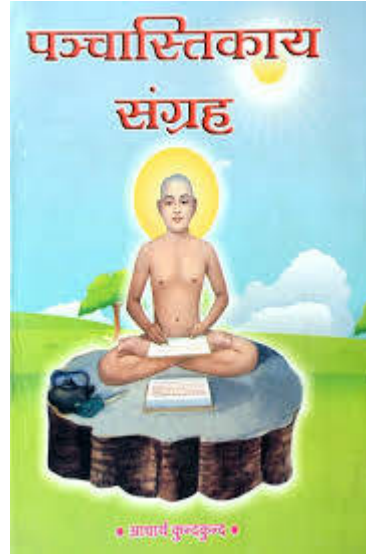


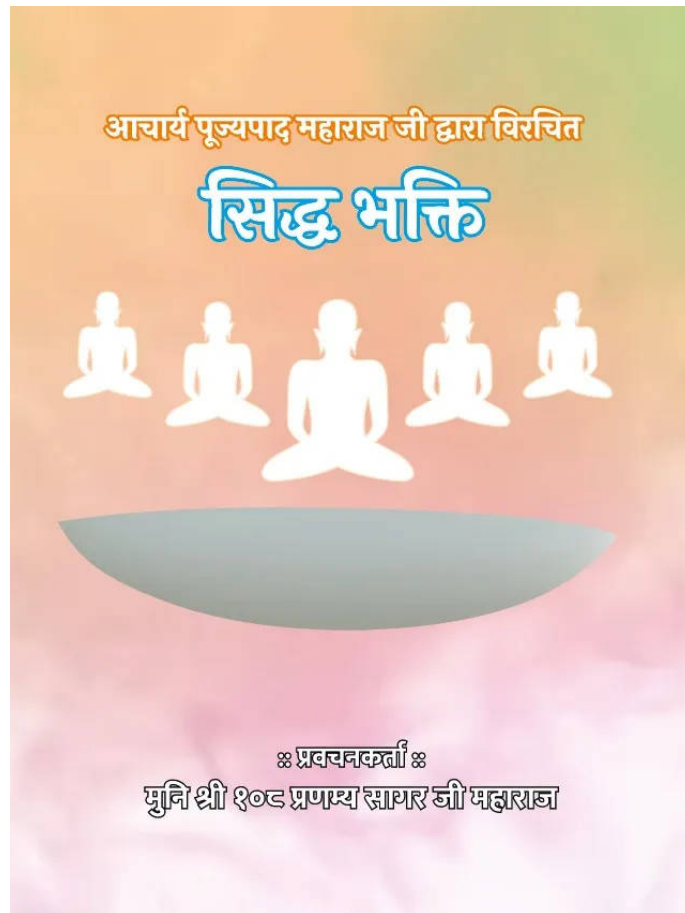
आचार्य कुन्दकुन्द

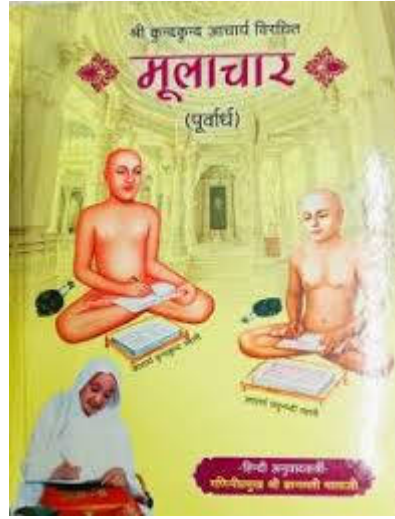
अष्टपाहुड



-आचार्य कुन्दकुन्द-







आचार्य कुंदकुंद

+

पंच परमागम

+

अन्य प्रचलित ग्रंथ

Team 4

अरिहंत

सिद्ध

आचार्य

उपाध्याय

साधु

जिनमंदिर

जिनप्रतिमा

जिनधर्म

जिनवाणी

निज आत्म

2

3

4

5

1

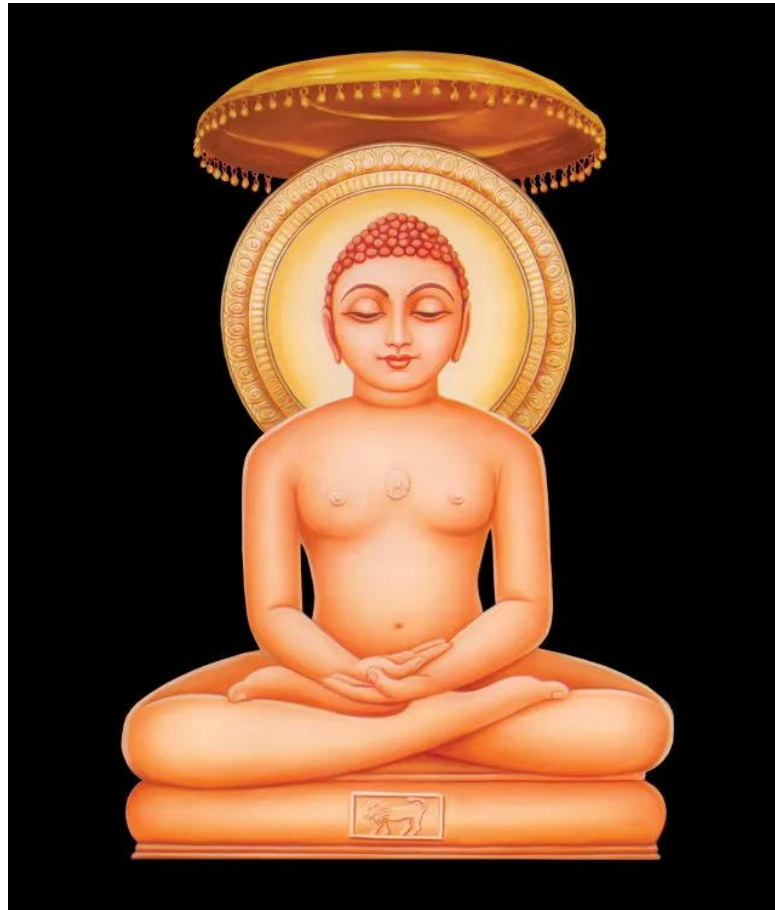
6

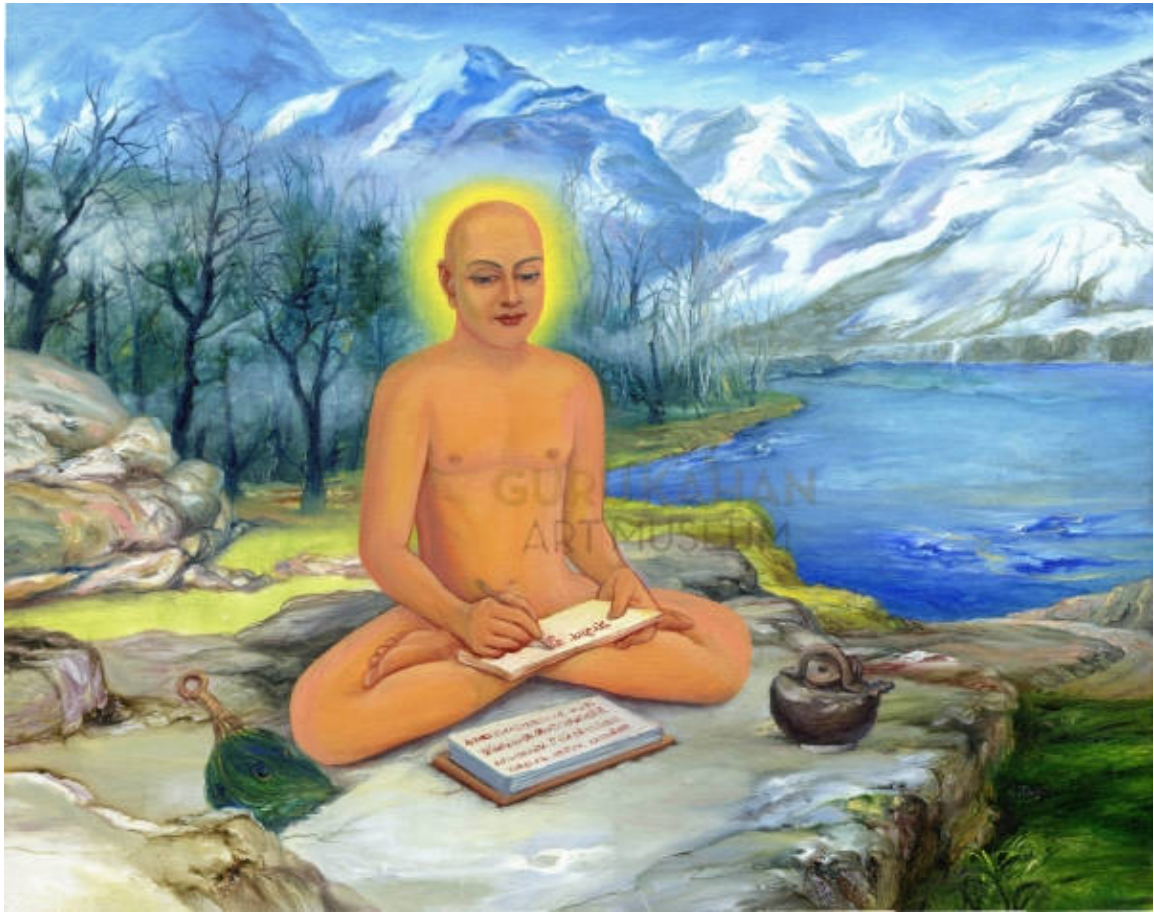
7

8

9

10









नव देवता

+

निज आत्म

TEAM 4

जल

चंदन

अक्षत

पुष्प

नैवेद्य

दीप

धूप

फल

अर्घ्य

जिनेन्द्र अर्चना

1

2

3

4

5

6

7

8

9

10







अष्ट द्रव्य + जिनेद्र अर्चना

Team 3

हिंसा

झूठ

कुशील

परिग्रह

चोरी

स्पर्शन

रसना

चक्षु

कर्ण

घ्राण

2

3

4

5

6

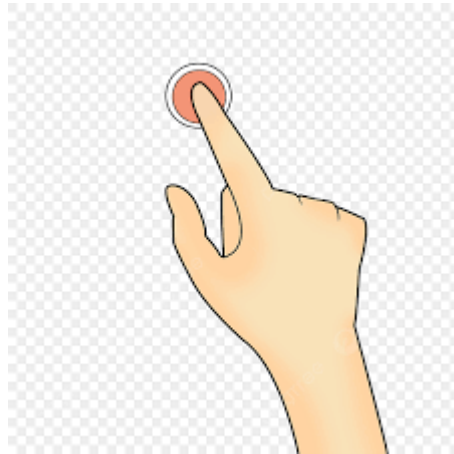
7

8

9

10







5 पाप

+

5 इंद्रियाँ

Team 2

वासुपूज्य भगवान

मल्लिनाथ भगवान

महावीर भगवान

पार्श्वनाथ भगवान

नेमिनाथ भगवान

भैस का चिन्ह

कलश का चिन्ह

शेर का चिन्ह

सर्प का चिन्ह

शंख का चिन्ह

2

3

4

5

6

7

8

9

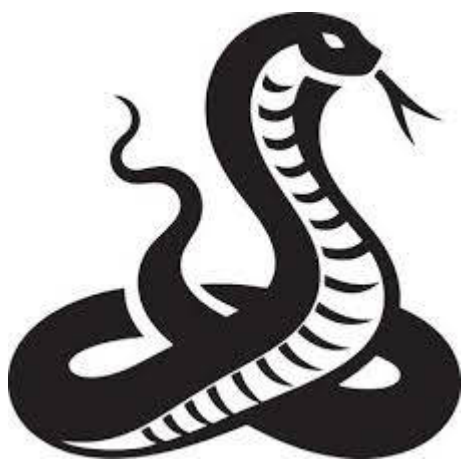
10





shutterstock.com · 2236616449





पंच बाल्यति

+

चिन्ह

Team 1

ऐरावत हाथी

लक्ष्मी

श्वेत भैस

उदित होता हुआ सूर्य

चंद्रमा

किलोल करता हुआ मछली युगल

कलश युगल

सरोवर

दो पुष्प मालाये

सिंहासन

2

3

4

5

6

7

8

9

10







1



माता के 16 स्वपन

Team 1

मोक्षमार्ग प्रकाशक

रत्नकरण्ड श्रावकाचार

छहढाला

परीक्षा मुख

तत्त्वार्थसूत्र

पद्मपुराण

धर्म के दशलक्षण

सर्वार्थ सिद्धि

सिद्धचक्र विधान

1

2

3

5

6

7

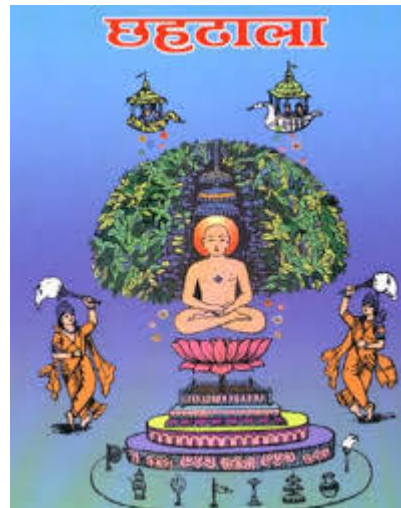
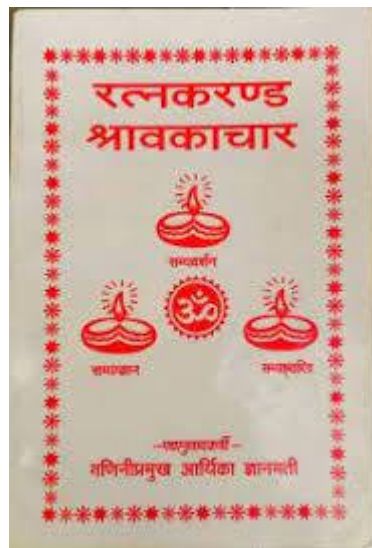
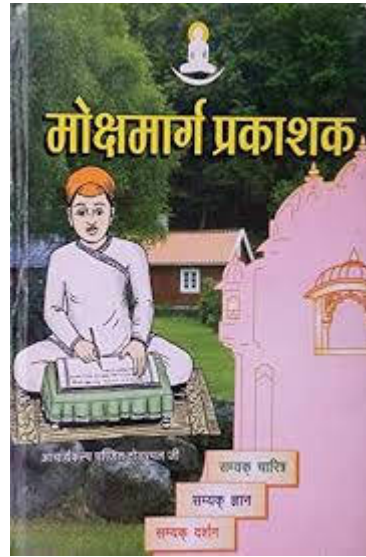
8

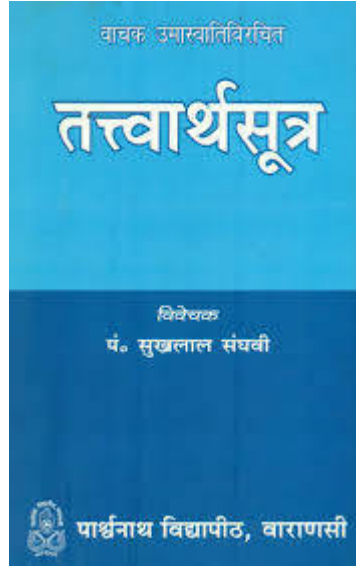
9

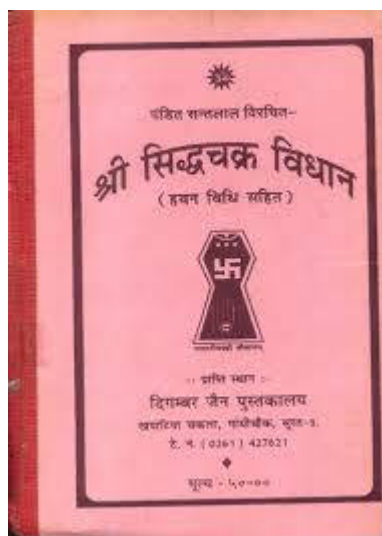
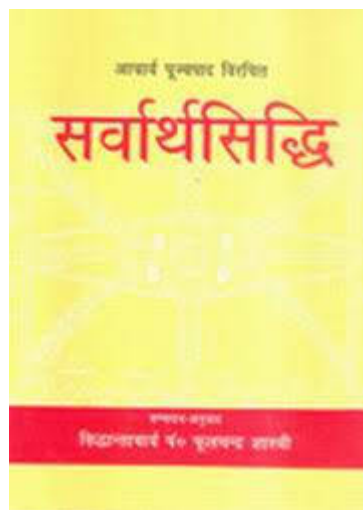
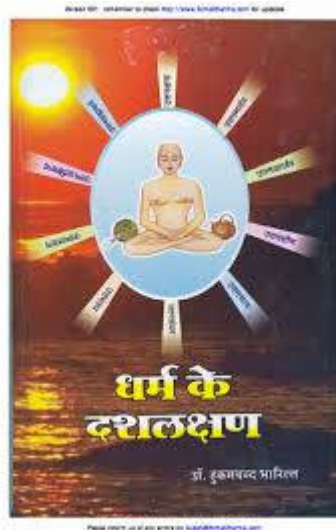
10

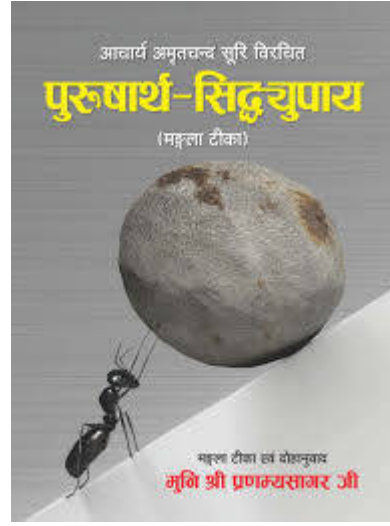
पुरुषार्थसिद्धि उपाय

4









मूल आगम

TEAM 2

चंवर

सुर पुष्प वृष्टि

अशोक वृक्ष

दिव्यध्वनी

भामंडल

देव दुन्दुभी

छत्र त्रय

सम्मोद शिखर जी

गिरनार जी

2

3

4

5

6

7

8

9

10



सिंहासन









अष्ट प्रतिहार्य

+

सिद्ध क्षेत्र

Team 3

दीपावली

रक्षाबंधन

श्रुत पंचमी

अक्षय तृतीया

वीर शासन जयंती

दस लक्षण महापर्व

अष्टान्हिका पर्व

क्षमावाणी

सोलह कारण पर्व

अनंत चतुर्दशी

1

2

3

4

5

6

7

8

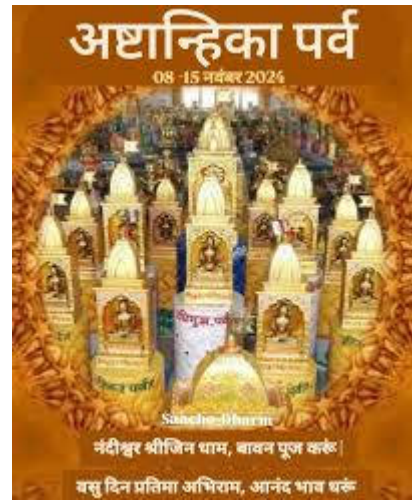
9

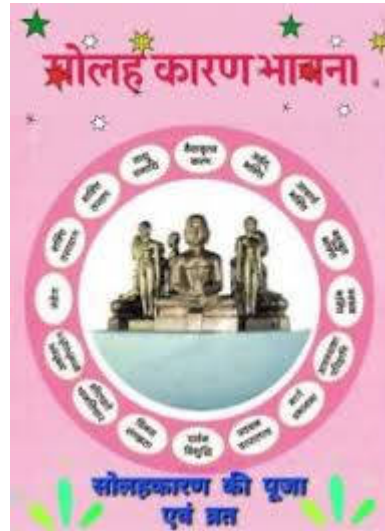
10



वात्सल्य अंग - विष्णुकुमार मुनि की कथा







शाश्वत पर्व

+

त्रैकालिक पर्व

Team 4

आहार दान

औषधि दान

अभय दान

ज्ञान दान

वाचना

पृच्छना

अनुप्रेक्षा

आम्नाय

धर्मोपदेश

स्वाध्याय

1

2

3

4

5

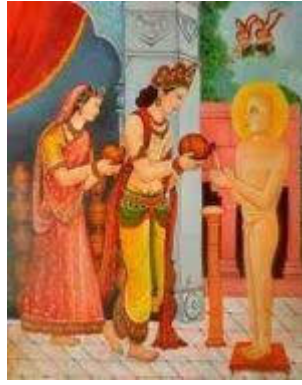
6

7

8

9

10







4 दान

+

स्वाध्याय व उसके अंग

Team 1

निःशंकित अंग

निःकांक्षित अंग

निर्विचिकित्सा अंग

अमूढदृष्टि अंग

उपगुहन अंग

स्तिथिकरण अंग

वात्सल्य अंग

प्रभावना अंग

पुण्य

पाप

1

2

3

4

5

6

7

8

9

10

निःशक्तित्व अंग एवं अंजन चोर



निर्विचिकित्सा अंग एवं उद्घाटन राजा



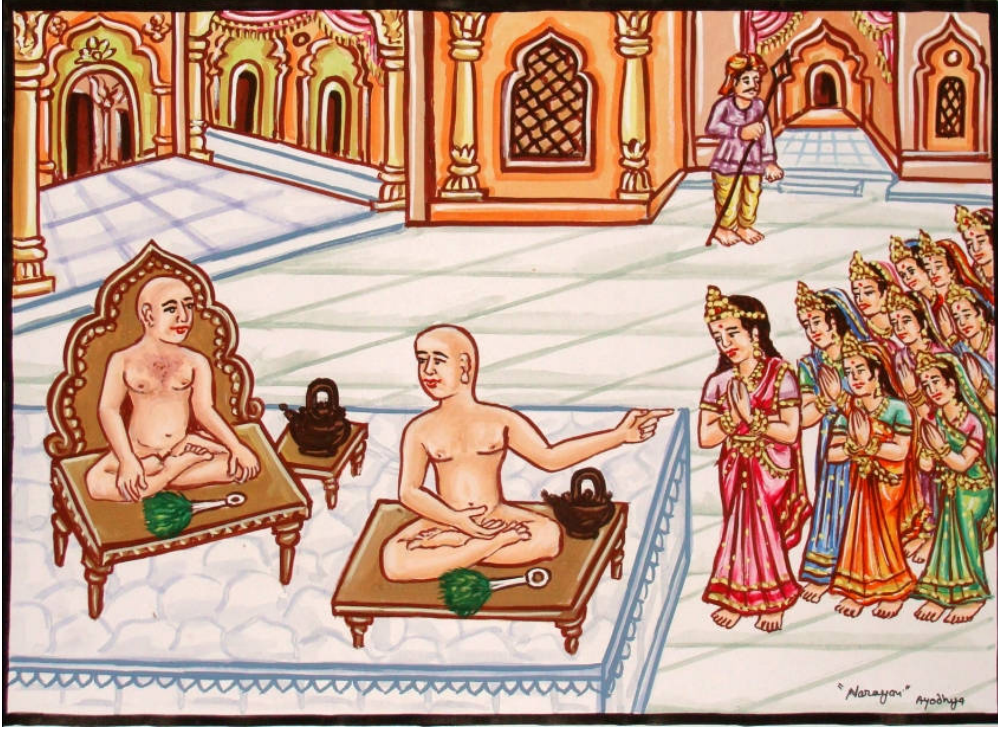
अमूढदृष्टि अंग एवं रेवती रानी



उपगूहन अंग एवं जिनेन्द्र भक्त सेठ



स्थिति करण अंग एवं वारिषेण मुनिराज



वात्सल्य अंग एवं विष्णुकुमार मुनिराज



निःकाक्षित अंग एवं अनंतमती



प्रभावना अंग स्वंवज्रकुमार मुनिराज





सम्यकत्व के 8 अंग

+

पुण्य+पाप

Team 2

पं बनारसीदास

नाटक समयसार

आचार्य नेमिचंद्र सिद्धांत चक्रवर्ती

गोम्मटसार

आचार्य मानतुंग

भक्तामर स्तोत्र

डॉ. हुकुमचन्द भारिल्ल

परमभाव प्रकाशक नयचक्र

ब्र. रवींद्र जी आत्मन्

अमृत वचन

1

2

3

4

5

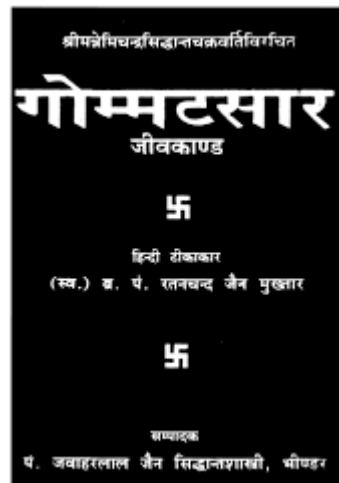
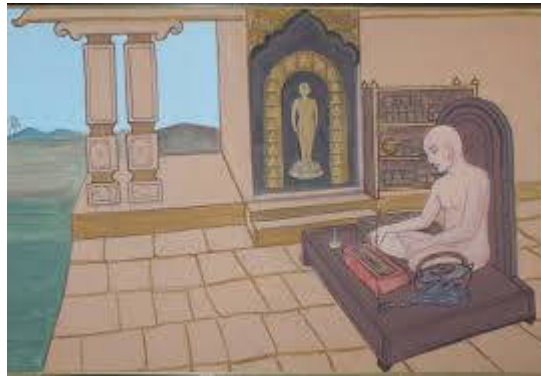
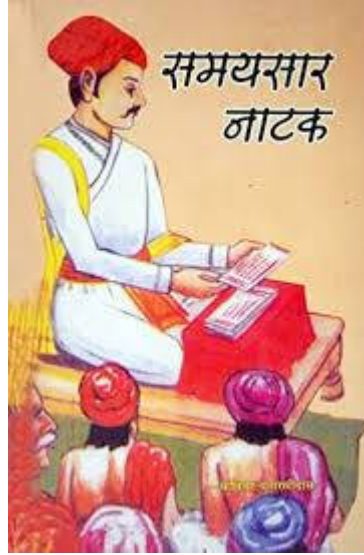
6

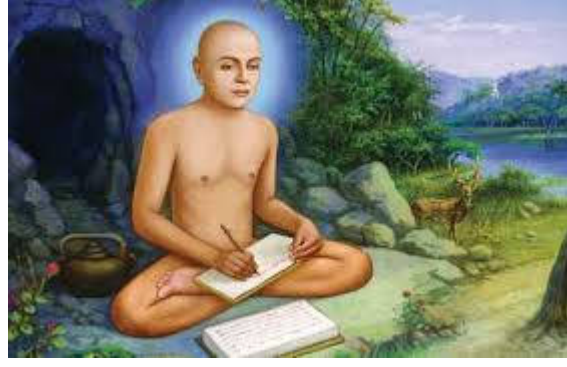
7

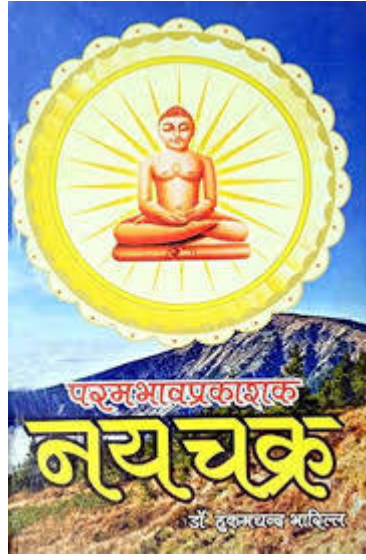
8

9

10









ग्रंथ व ग्रंथकार

Team 3

गुरुदेव श्री कानजी स्वामी

श्रीमद् राजचंद्र जी

पं. टोडरमल जी

गणेश प्रसाद जी वर्णी

बहिन श्री चंपाबेन

प्रथमानुयोग

करणानुयोग

चरणानुयोग

द्रव्यानुयोग

जैन ध्वज

1

2

3

4

5

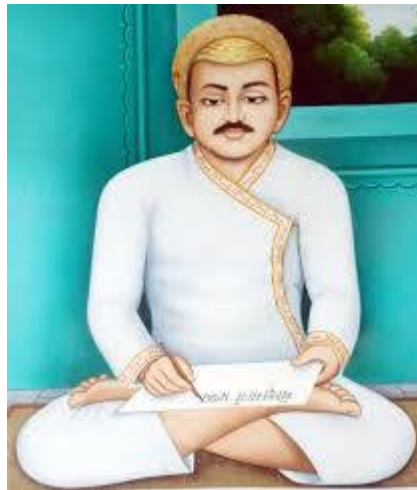
6

7

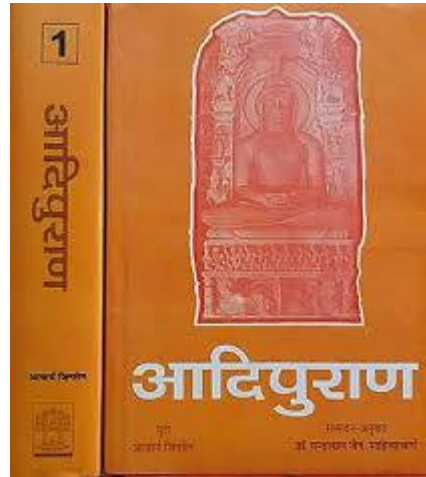
8

9

10



મહાત્મા ગાંધી





जिनशासन के प्रेरणास्तोत्र

+

4 अनुयोग

+

जैन ध्वज

Team 4

देव पूजा

गुरु उपासना

स्वाध्याय

संयम

तप

दान

क्रोध

लोभ

मान

माया

1

2

3

4

5

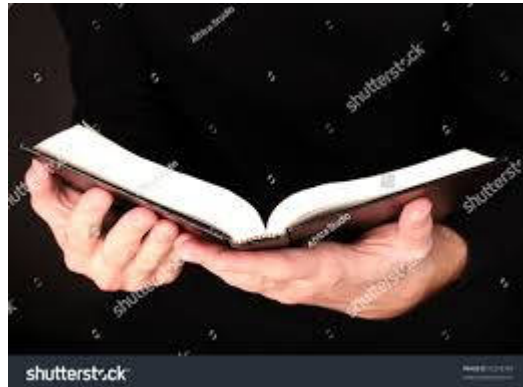
6

7

8

9

10







षट् आवश्यक

+

4 कषाय

Team 4

सती अंजना

अंजन चोर

सती अनंतमती

राजा उद्यायन

रेवती रानी

वारिषेण मुनिराज

जिनेन्द्रभक्त सेठ

विष्णुकुमार मुनिराज

वज्रकुमार मुनिराज

रानी चेलना

1

2

3

4

5

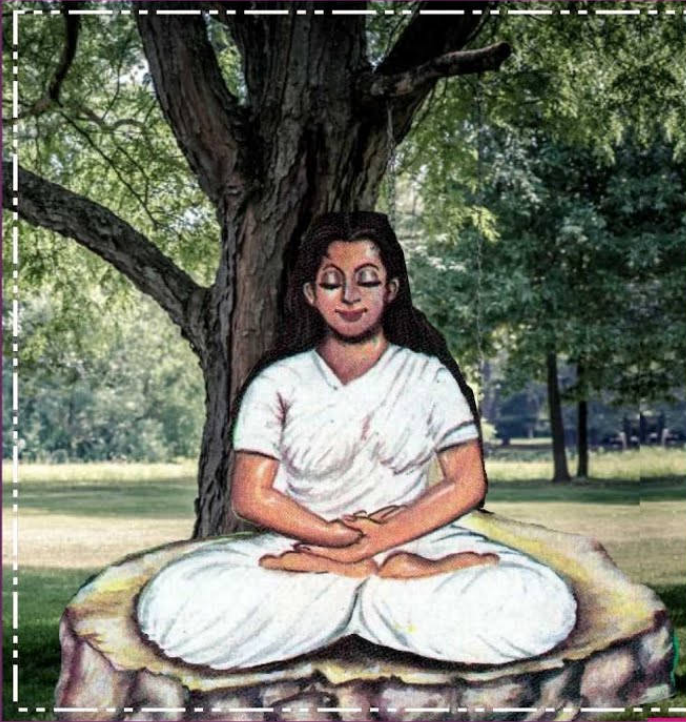
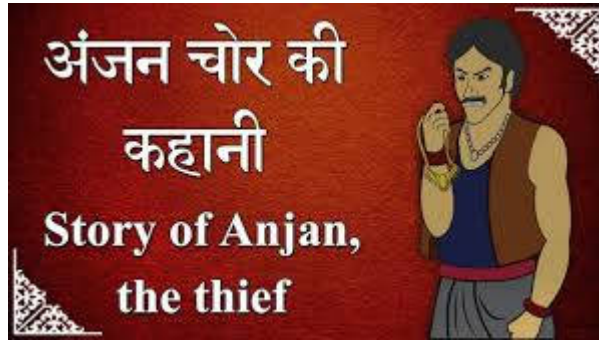
6

7

8

9

10



सर्वोदय अहिंसा की प्रस्तुति

निःकांक्षित अंग में प्रसिद्ध

सती अनंतमती गाथा

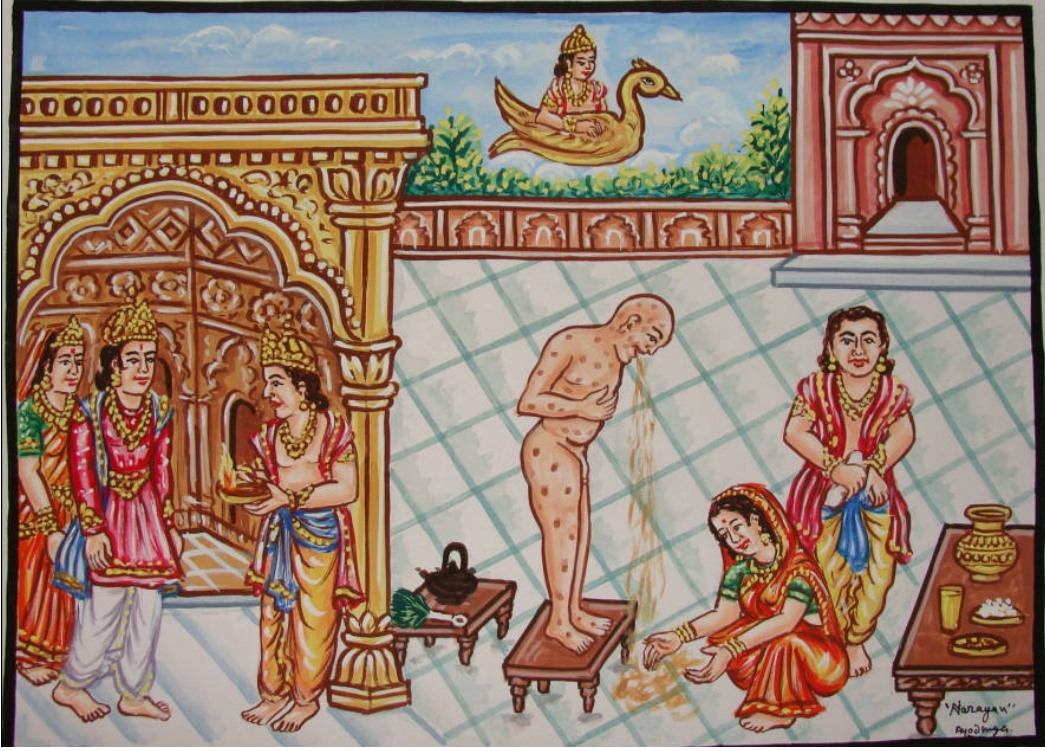
रचनाकार

बाल ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन्'

स्वर

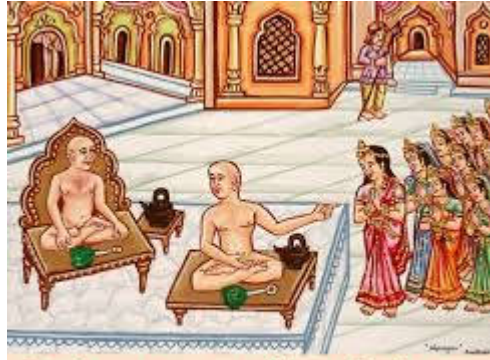
पण्डित संदेश जैन, उस्मानपुर-दिल्ली
आत्मारथी श्रुति जैन, उस्मानपुर-दिल्ली

निर्विचिकित्सा अंग एवं उद्दयन राजा



अमूढदृष्टि अंग एवं रेवती रानी





स्थितिकरण अंग - वारिषेण मुनि की कथा



प्रभावना अंग एवं वज्रकुमार मुनिराज





सम्यकदर्शन के 8 अंगों में प्रसिद्ध

+

सती अंजना व चेलना

Team 3

आदिपुराण

हरिवंश पुराण

सत्य की खोज

आप कुछ भी कहो

शलाका पुरुष

ज्ञानानन्द श्रावकाचार

सामान्य श्रावकाचार

अहिंसा

भगवती आराधना

सागार धर्मामृत

1

2

3

4

5

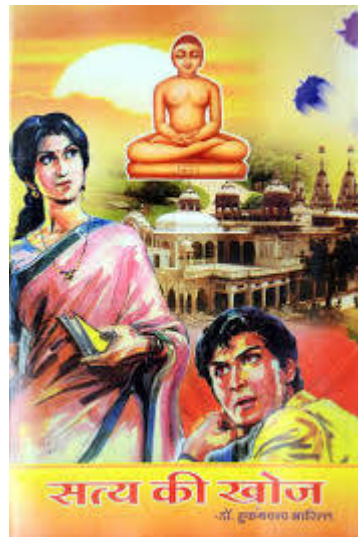
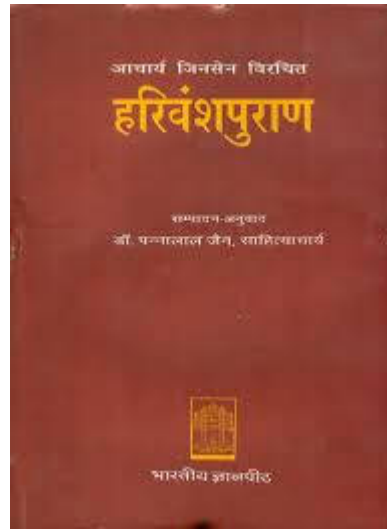
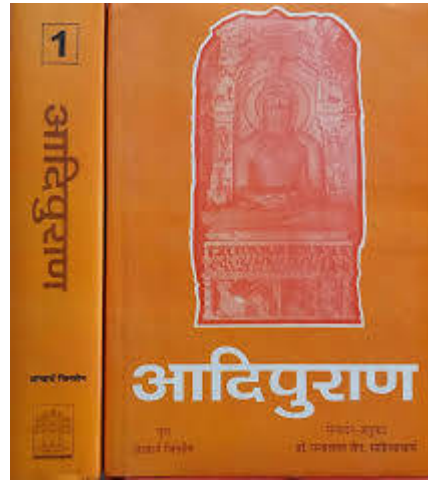
6

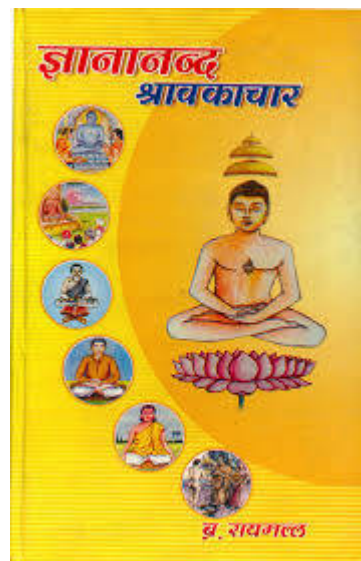
7

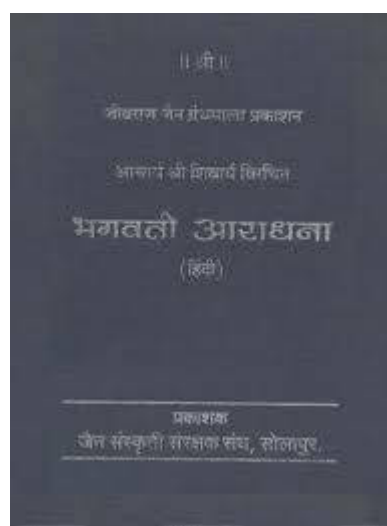
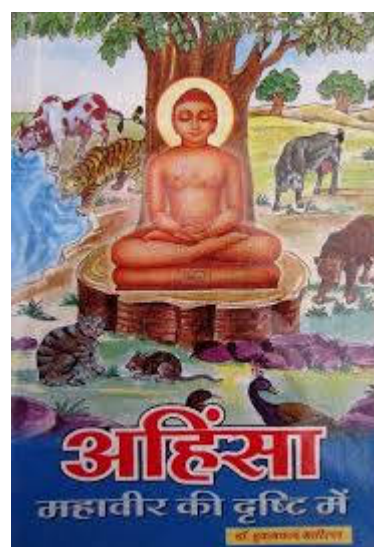
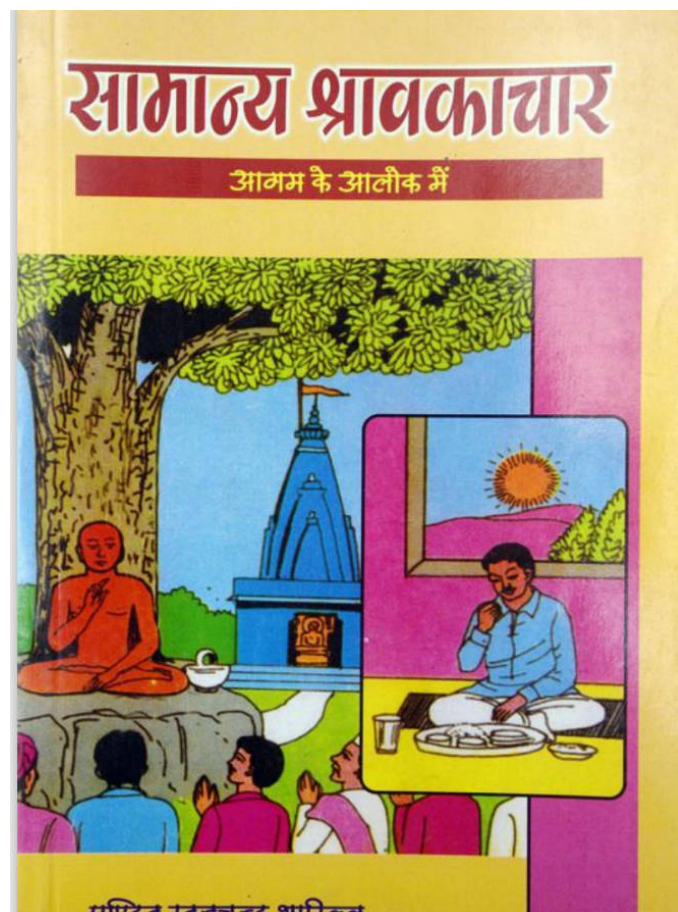
8

9

10







पण्डितप्रवर आशाधर विरचित
धर्मामृत
(सागार)



सम्राट्-अद्वैत
विद्वान्नाथार्य प. कैलाशचन्द्र शास्त्री

Please inform us of any errors on najesh@AtmaDharma.com.



प्रथमानुयोग

+

चरणानुयोग के ग्रंथ

Team 2

7 तत्व

6 द्रव्य

8 कर्म

9 पदार्थ

11 प्रतिमा

14 गुणस्थान

3 रत्नत्रय

24 तीर्थकर

5 भाव

13 चारित्र

2

3

4

5

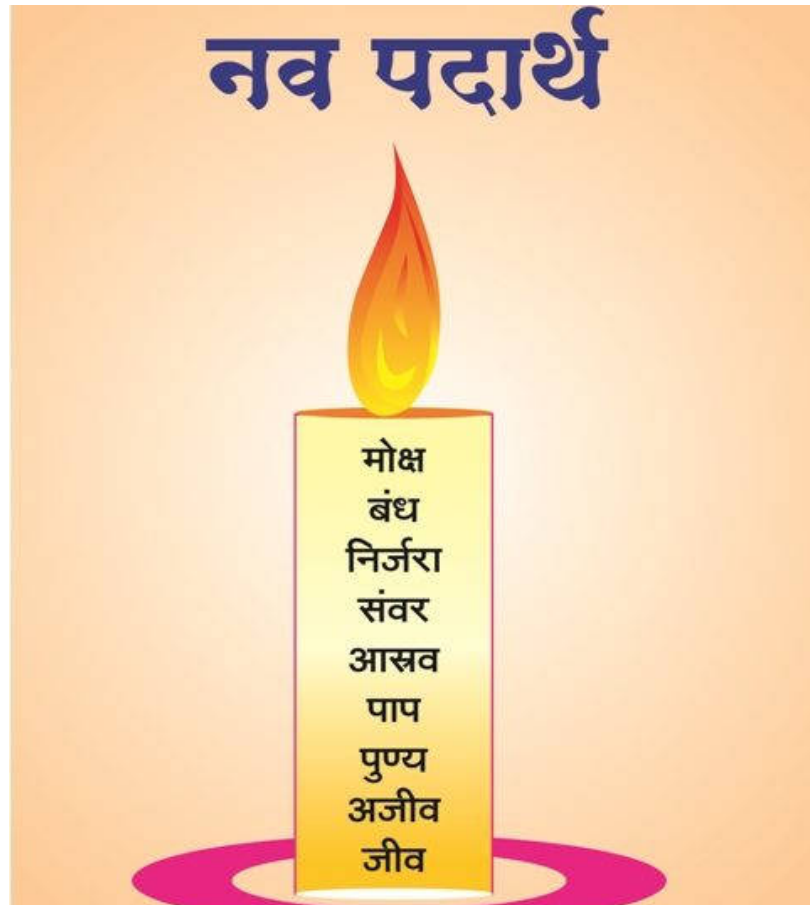
6

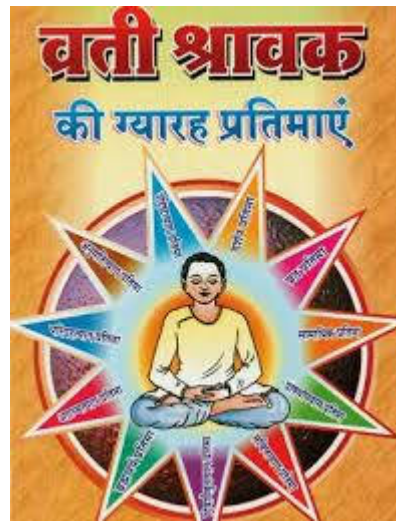
7

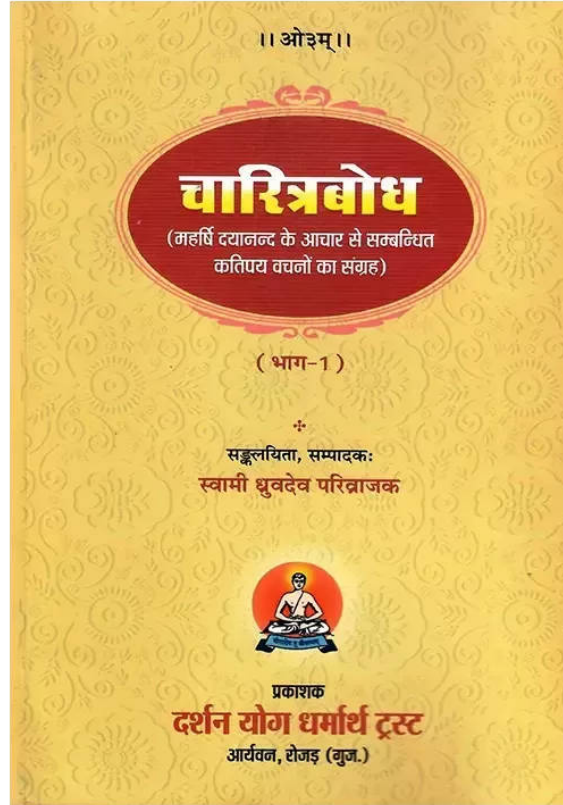
8

9

10









जैन सिद्धांत

Team 1

गुणस्थान विवेचन

त्रिलोकसार

करणानुयोग परिचय

लब्धिसार

तिलोयपण्णत्ति

कार्तिकेयानुप्रेक्षा

इष्टोपदेश

समाधितंत्र

राजवार्तिक

परमात्मप्रकश

1

2

3

4

5

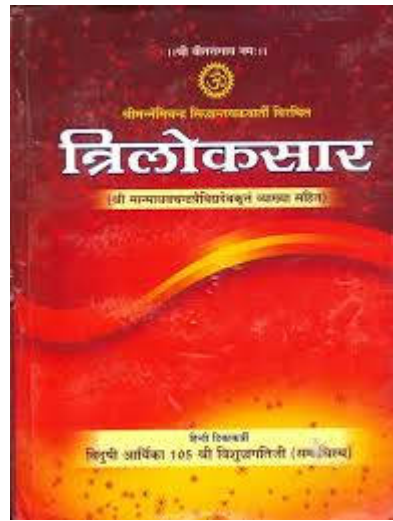
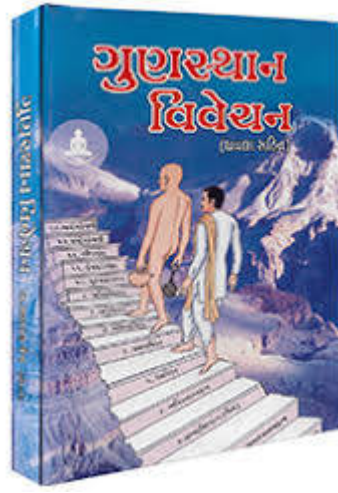
6

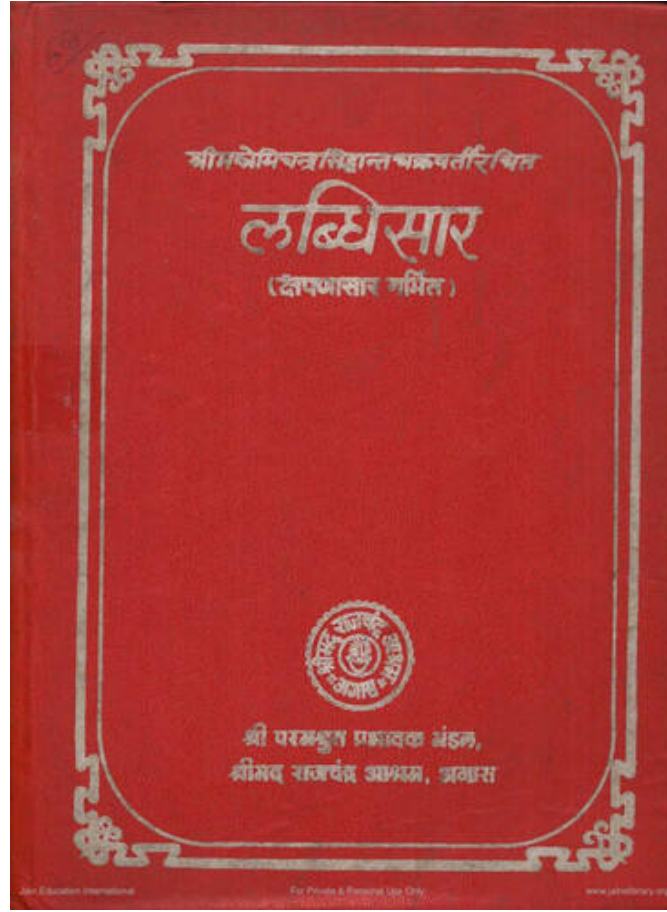
7

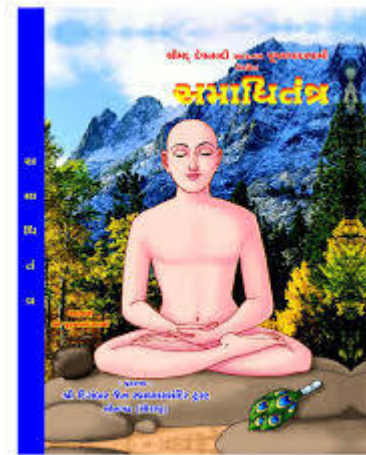
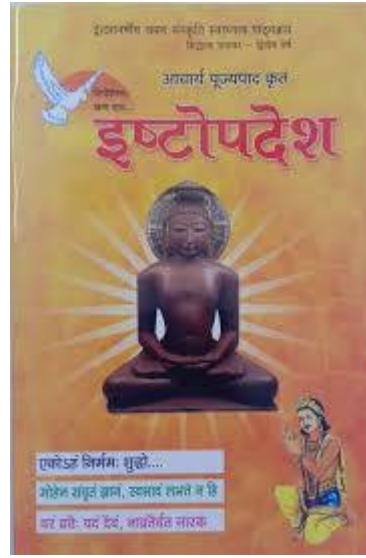
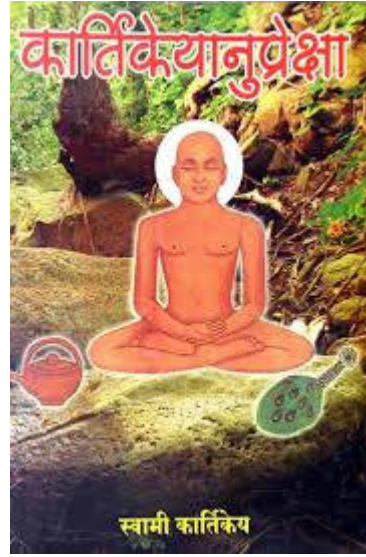
8

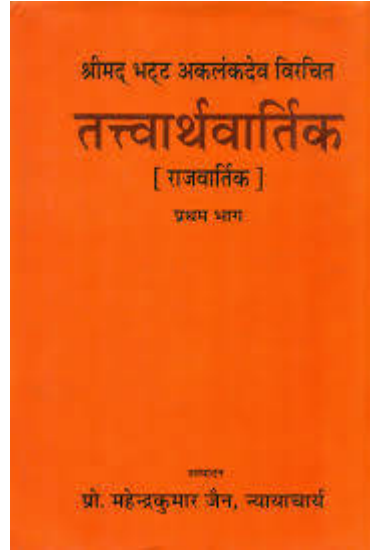
9

10









करणानुयोग

+

द्रव्यानुयोग के ग्रंथ

Team 1

क्षुधा परिषहजय

तृषा परिषहजय

उष्ण परिषहजय

दंशमशक परिषहजय

अरति परिषहजय

चर्या परिषहजय

श्यया परिषहजय

नग्न परिषहजय

याचना परिषहजय

अलाभ परिषहजय

2

1

3

4

5

6

7

8

9

10

1. क्षुधा परिषह जप
योग विधि न मिलने पर बिना आहार के जाते हुए।



भूख लगे आहार न पाय, अनाहारी चिद्रूप लखाय।
ज्ञानामृत भोजी मुनिराज, सहें परिषह शिवसुखदाय॥

2. तृषा परिषह जप
योग विधि न मिलने पर बिना जल पिये जाते हुए।



तृषा सतावे कोपे पित्त, नहीं दीनता लावे चित्त।
भेदज्ञान करते मुनिराज, समता रस से तृप्त सहाय॥

4. उष्ण परिषह जप
ग्रीष्म ऋतु में पर्वत पर गर्मी सहन करते हुए।



रहते आत्म गुफा के मोहि, मोह ताप जिनके उर नहीं।
सहज शान्त समता के धनी, उष्ण परिषह जीते मुनी॥

5. इंसमयक परिषह जप
नग्न शरीर पर इंस मच्छर आदि की पीड़ा को सहन करते हुए।



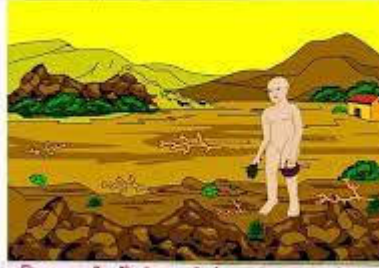
इंसमयक जब तन में लगें, ज्ञानरूप में मुनिवर पगे।
वहे ज्ञानधारा उर मोहि, परिषह में उपयोग सु नाहि॥

7. अरति परिषद जय
अपवित्र पदार्थों को देखकर उससे द्वेष न करते हुए।



पापोदय का कार्य विचार, वरतें सहजहि जानतहार।
अरति तजें संयम दद रहैं, ते मनिकर्म कलिमादहैं॥

9. चर्या परिषद जय
मार्ग में चलते समय बर्तन-कंकरी के घुमने की परवाह न करते हुए।



अनिपत वाली करैं बिहार, ईर्या संगति सहित अकिन्जर।
चर्या परिषद सो नहिं डरें, मुक्ति मार्गजग में बिस्तरें॥

11. शयन परिषद जय
कठोर पृथ्वी पर एक आसन से अन्तर्मुहूर्त के लिए सोते हुए।



भूमि काष्ठ पाषाण पै सोवैं, सावधान नहिं जाफिल होवैं।
निद्रा अल्प न करवट फेरैं, अन्तर्मुख हो निजपद हेरैं॥

8. नग्न परिषद जय
संसारी लोगों की परवाह किये बिना निर्विकार नग्न रहते हुए।



निर्विकार शोभे परिणाम, यथाजात तनरूप ललाम।
ध्यावैं अपने को अशरीर, नग्न परिषद जीतैं वीर॥

14. याचना परिषह जय
स्व में संतुष्ट रहते हुए किसी भी प्रकार की लौकिक चाह न करते हुए।



निज में ही संतुष्ट यतीश्वर, पर की चाह न करते गुरुवर।
नहीं औषधि भी वे याचें, परम विरक्त-शान्त स्वराचें ॥

15. अलाम परिषह जय
बहुत समय तक मग में ली हुई आखड़ी के अरथ आहम के लाम की परख न करते हुए।



पर से लाम न हानि मानें, सहज पूर्ण प्रभुता पहिचानें।
पर-अलाम प्रति सहज उपेक्षा, भावें ये द्वादश अनुपेक्षा ॥



22 परिषद्

Team 2

अनित्य भावना

एकत्व भावना

अशरण भावना

संसार भावना

अन्यत्व भावना

बोधिदुर्लभ भावना

अशुचि भावना

धर्म भावना

निर्जरा भावना

आस्रव भावना

1

2

3

4

5

6

7

8

9

10







12 भावना

Team 3

रत्नप्रभा

शर्कराप्रभा

बालुका प्रभा

पंक प्रभा

धूम प्रभा

तमः प्रभा

महातमः प्रभा

वचन

काय

मन

2

3

4

5

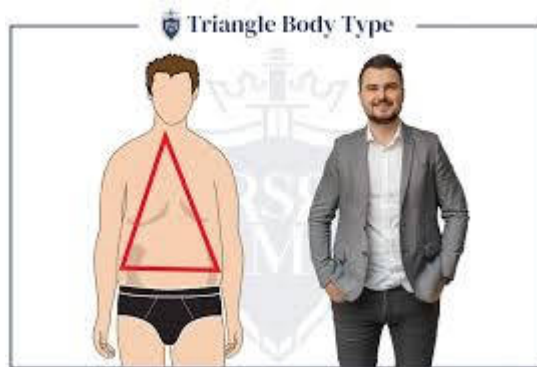
6

7

8

9

10





7 नरक

+

3 योग

Team 4

जलकायिक

वनस्पतिकायिक

अग्निकायिक

वायुकायिक

पृथ्वीकायिक

मीठा

कड़वा

कषायला

खट्टा

चरपरा

2

1

3

4

5

6

7

8

9

10







स्थावरकायिक

+

5 रस

जय जिनेन्द्र

